Preface

अभियोजना

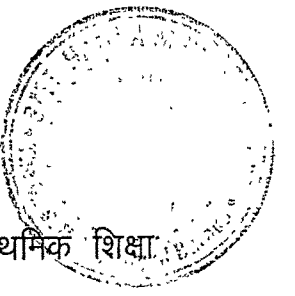

हिन्दी काव्य के प्रति मैं बचपन से ही आकर्षित रहा हूँ। प्राथमिक शिक्षा के समय मैं कक्षा में हमेशा काव्य पाठन किया करता था। मेरा काव्य के प्रति यह भावात्मक लगाव उत्तरोत्तर बढता ही रहा है। विशेषतः देखा जाय तो परम्परित छंद दोहा और चौपाई के प्रति मेरी बहुत गहरी रुचि रही है। जब भी कहीं पर 'रामचरित मानस' का पाठ होता तो मैं अवश्य जाता, छंद की ग़ेयता को बड़े ही ध्यान से सुनता। अतः दोहा छंद की गेयता और लयता मेरे हृदय में घर कर गई।

आगे चलकर अपने स्नातकोत्तर अध्ययन काल में जब मैंने मध्यकालीन कविता को पढ़ा तो काव्य के प्रति मेरी रुचि और बढ़ गई । इसी समयावधि में मैंने डॉ. विष्णु विराट चतुर्वेदी के व्यक्तित्व को जाना जो स्वयं काव्य के वरिष्ठ हस्ताक्षर हैं। कक्षा में अक्सर प्रायः मौखिक कंठस्थ कविताएं सुनाया करते। मैं उनसे प्रभावित हुआ। एम.ए. करने के पश्चात मैं पी.एच.डी. हेतु डॉ. विष्णु विराट चतुर्वेदी से मिला और उनसे अपने काव्य के प्रति आकर्षण की बात की तो उन्होंने बताया कि दोहा छन्द अब पुनः आधुनिक हिन्दी साहित्य में स्थापित हुआ है और देश के अनेक सशक्त रचनाकार इस छंद को पुनः सृजित कर रहे हैं। अनेक विविधताओं के कारण इसके नये-नये प्रयोग भी हो रहे हैं। यह शोध का विषय है इनके मिलने के पश्चात मैंने आधुनिक दोहा साहित्य पढ़ा और देखा कि अनेक पत्र पत्रिकाओं में दोहा छंद की चर्चा है। अतः मैंने सहज ही इस विषय पर शोधकार्य करते की ठान ली और हिन्दी विभाग के वरिष्ठ विद्वान डॉ. विष्णु विराट चतुर्वेदी के अनुग्रह से मुझे शोध का विषय मिल गया। ''**साठोत्तरी हिन्दी साहित्य में दोहा काव्य, विविध आयाम**''

शोध का विषय म.स विश्वविद्यालय, बड़ौदा के हिन्दी विभाग में पंजीकृत हो गया और मैंने अपना शोधकार्य प्रारंभ कर दिया।

आधुनिक साहित्य जगत में अनेक दोहाकार हैं जिन्होंने बहुत परिमाण में दोहे लिखे हैं और दोहा साहित्य की सतसई लेखन की परम्परा से भी जुड़े हैं। साथ ही पत्र-पत्रिकाओं में भी दोहों का प्रकाशन निरंतर होता रहता है। मैंने देश भर के कई सशक्त दोहाकारों से संपर्क स्थापित किया और उनसे विषय के सम्बंध में काफ़ी सहयोग प्राप्त किया। अतः मुझे अपने विवेच्य विषय पर सामग्री उपलब्ध करने के लिए इन दोहा छंद के सशक्त हस्ताक्षरों का विशेष मार्गदर्शन और सहयोग प्राप्त हुआ। साथ ही गुरुवर डॉ. विष्णु विराट चतुर्वेदी के कुशल निर्देशन प्रोत्साहन, प्रेरणा और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की आर्थिक सहायता से मैंने नियत समय पर अपना शोधकार्य सम्पन्न कर लिया है।